

## Chapter 4

<p>Question: Why do we fight in this world?</p>	<p>प्रश्न : इस संसार में हम आपस में लड़ते-झगड़ते क्यों हैं?</p>
<p>Krishnamurti: Why do we fight? You want something and I want the same thing, so we fight for it. You are clever, I am not clever, and we fight about it. You are more beautiful than I am, and I feel I must also be beautiful, and so we squabble. You are ambitious and I am ambitious, you want a particular job and I want the same job, and so it goes on and on, does it not? There is no end to squabbling as long as we want something. It is very difficult. As long as we want something, we are going to quarrel. As long as you say India is the most beautiful, the greatest, the most perfect, the most civilized country in the world, then you are going to have quarrels. We start in a small way—you want a shawl and you fight for it. That same thing goes on in life in different ways and in different walks.</p>	<p>कृष्णमूर्ति : हम लड़ते-झगड़ते क्यों हैं। आप किसी चीज़ को पाना चाहते हैं और मैं भी उसे पाना चाहता हूँ इसलिए उसे पाने के लिए हम एक दूसरे से लड़ते-झगड़ते हैं। आप होशियार हैं, मैं होशियार नहीं हूँ और इस पर हम झगड़ते हैं। आप मुझसे ज़्यादा सुंदर हैं और मैं महसूस करता हूँ कि मुझे भी सुंदर होना चाहिए इसलिए हमारे बीच कहा-सुनी होती है। आप महत्वाकांक्षी हैं और मैं भी हूँ, आप कोई खास काम करना चाहते हैं और मैं भी उसी काम पर लगना चाहता हूँ और यह सिलसिला चलता चला जाता है। जब तक हम कुछ पाना चाहते हैं, तब तक झगड़े का अंत नहीं हो सकता। यह बहुत कठिन है। जब तक हमें कुछ चाहिए, हम लोग आपस में झगड़ते रहेंगे। जब तक आप यह कहना जारी रखेंगे कि भारत सबसे सुंदर है, सबसे अधिक महान है, संसार में सबसे अधिक सभ्य राष्ट्र है तब तक झगड़े होते ही रहेंगे। शुरुआत छोटे स्तर पर होती है--आप एक शॉल पाना चाहते हैं और उसे पाने के लिए संघर्ष करने लगते हैं। यही प्रक्रिया जीवन में अनेक रूपों में, अनेक स्तरों पर चलती रहती है।</p>
<p>Question: When a teacher or some other superior compels us to do a thing which we do not want to do, what are we to do?</p>	<p>प्रश्न : जब कोई शिक्षक अथवा कोई अधिकारी हमें किसी ऐसे कार्य को करने के लिए विवश करता है जिसे हम नहीं करना चाहते, तो हमें क्या करना चाहिए?</p>
<p>Krishnamurti: What do you generally do? You are frightened and you do what you are told, don't you? Suppose you are not frightened, and you ask the superior, the teacher, to explain to you what it is all about, what will happen? Suppose you say—not impudently, not disrespectfully—'I do not understand why you are asking me to do this, which I do not want to do; please explain why you want this to</p>	<p>कृष्णमूर्ति : ऐसे समय आप सामान्यतया क्या किया करते हैं? आप भयभीत होते हैं अतः आप वही करते हैं जिसे करने के लिए आपसे कहा जाता है, क्या ऐसा ही नहीं होता? मान लीजिए यदि आप बिना डरे अपने से बड़े व्यक्ति से, अध्यापक से यह कहते हैं कि वे इस बारे में आपको ठीक से सब समझाएं, तो क्या होगा? मान लीजिए आप बिना अभद्रता या अनादर किये नम्रतापूर्वक कहते हैं--'मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि आप मुझे यह कार्य करने के लिए क्यों कह रहे हैं जबकि मैं इसे करना नहीं चाहता हूँ, कृपया मुझे समझाएं कि आप मुझसे यह कार्य क्यों करवाना चाहते</p>

## Chapter 4

<p>be done.’ Then, what will happen? What would generally happen is that the teacher or superior would be impatient. He would say, ‘I have no time to explain, go and do it.’ Also, the superior or your teacher might feel he has no reason; he just says, ‘Go and do it’; he has not thought it out. When you quietly, respectfully ask him, ‘Please tell me,’ then you make the teacher, the superior, think out the problem with you. Do you understand? Then, if you see the reason, if you see that he is right, that there is sense in what he says, then you will naturally do it; in that, there is no compulsion. But to do something that the superior says because you are frightened of him does not mean a thing. You do it only because you are frightened, and you would go on doing it even if he were not there.</p>	<p>हैं’। तब उस स्थिति में क्या होगा? जैसा सामान्यतः हुआ करता है शायद शिक्षक या वरिष्ठ व्यक्ति धैर्य खो देगा। वह कह देगा, ‘मेरे पास समझाने का समय नहीं है, जाओ और इसे करो’। यह भी संभव है कि शिक्षक या बड़ा व्यक्ति यह महसूस करे कि बतलाने के लिए उसके पास कोई कारण नहीं है और वह बस यही कहे, ‘जाओ और इसे करो’, शायद उसने इस बारे में सोच-विचार ही नहीं किया हो। जब आप शांतिपूर्वक, आदरपूर्वक उससे निवेदन करेंगे, ‘कृपया मुझे बताएं’, तो शिक्षक, और जो भी आपके बड़े हैं, आप उन्हें समस्या पर मिलजुलकर सोच-विचार करने के लिए तैयार कर ही लेंगे। क्या आप समझ रहे हैं? तब यदि आपको औचित्य स्पष्ट हो जाता है, यदि आप देखते हैं कि वह ठीक कह रहा है, उसकी बात सार्थक है तो आप उसे सहज रूप से करेंगे ही, उसे करने के लिए आपको बाध्य नहीं होना पड़ेगा। लेकिन डर के कारण अगर आप उनकी बात सुनते हैं तो उसका??के कोई मायने नहीं है। उस स्थिति में आप केवल इसलिए उस कार्य को करते रहेंगे क्योंकि आप डरते हैं, और आप उनकी अनुपस्थिति में भी व्यर्थ ही उस काम को करते रहेंगे।</p>
<p>Question: As puja is a form of imitation, why do we do it?</p>	<p>प्रश्न : पूजा करना एक प्रकार का अनुकरण ही होता है, फिर हम इसे क्यों करते हैं?</p>
<p>Krishnamurti: Do you do puja? Why do you do it? Because your parents have done it. You have not thought it out, you do not know the meaning of all that. You do it because your father or mother or great-aunt does it. We are all like that. When somebody does something, I copy, hoping to derive some benefit from it. So, I do puja because everybody does puja. It is a form of imitation. There is no originality about it. There is no consideration of it. I just do it, hoping that some good will come out of it.</p>	<p>कृष्णमूर्ति : आप पूजा करते हैं क्या? आप पूजा क्यों करते हैं? क्योंकि आपके अभिभावक, माता-पिता इसे किया करते हैं। आपने इस बारे में सोच-विचार नहीं किया है, इस सब का अर्थ क्या है आप नहीं जानते। आप इसे इसलिए करते हैं क्योंकि आपके पिता या माता या दादी या नानी इसे करते हैं। हम सभी इस मामले में एक जैसे हैं। जब कोई व्यक्ति कुछ करता है तो मैं उसकी नकल करने लगता हूँ, मुझे आशा होती है कि ऐसा करने से मुझे कोई लाभ होगा। इसलिए मैं भी औरों की देखा-देखी पूजा-पाठ करने लगता हूँ। यह एक प्रकार का अनुकरण ही होता है। इसमें मौलिकता कहीं नहीं होती। मैंने इसे समझ-बूझकर नहीं किया होता। मैं इसे बस इस आशा से करता हूँ कि इसका कोई शुभ फल मुझे प्राप्त होगा।</p>
<p>Now, you can see for yourselves that if you repeat a thing over and over again, your mind becomes dull. That</p>	<p>अब यह तो आप स्वयं ही देख सकते हैं कि यदि आप किसी चीज़ को बारंबार दुहराते हैं तो आपका मन जड़ होने लगता है। यह बिलकुल ही साफ बात है, जैसा कि</p>

## Chapter 4

<p>is an obvious fact, like in mathematics wherein if you repeat over and over again, it has no meaning. Similarly, a ritual repeated over and over again makes your mind dull. A dull mind feels safe. It says, 'I have no problems, God is looking after me, I am doing puja, everything is perfect,' but it is still a dull mind. A dull mind has no problems. Puja, the repetition of a mantra, or any words which are constantly being repeated, make the mind dull. This is what most of us want; most of us want to be dull so as not to have any disturbance. Whether it is beneficial or not is a different problem. You know that by repeating you can make your mind very quiet—not in the living sense, but in the dead sense—and that mind then says, 'I have solved my problem.' But a dead mind, a dull mind, cannot be free of its problems. It is only an active mind, a mind that is not caught in imitation, not caught in any fear, that can look at a problem and go beyond it and be free of it.</p>	<p>गणित में होता है, यदि आप किसी चीज़ को बार-बार दुहराएंगे तो वह चीज़ अपना अर्थ खो देती है। इसी प्रकार किसी धार्मिक कृत्य को बारंबार किए जाने से मन जड़ होने लगता है। और ऐसा मन, मंद होने से, संवेदनशीलता के कम होने से सुरक्षित महसूस करता है। वह कहता है, “अब मेरे लिए कोई समस्या नहीं रही, भगवान मेरी देखभाल कर रहे हैं, मैं पूजा करता हूँ, सब कुछ ठीक चल रहा है।” लेकिन ऐसा मन अभी भी जड़ ही है। मंद मन के लिए तो कोई समस्या होती नहीं। पूजा करना, किसी मंत्र का बारंबार उच्चार करना, या किन्हीं शब्दों को निरंतर दुहराते रहने से मन असंवेदनशील होता चला जाता है। हममें से अधिकांश यही चाहते हैं, हममें से अधिकतर लोग असंवेदनशील होना चाहते हैं ताकि किसी प्रकार किसी प्रकार की रोक-रूकावट से वास्ता न पड़े। यह सच में हितकर है या नहीं यह एक अलग बात है। आप जानते हैं कि पुनरावृत्ति के माध्यम से आप अपने मन को खामोश कर सकते हैं—पर यह मरघट की खामोशी होती है, जीवंत निश्चलता नहीं होती—और तब मन कहता है, “मैंने अपनी समस्या को सुलझा लिया है”। परंतु एक मृत मन, एक असंवेदनशील मन अपनी समस्याओं से छुटकारा नहीं पा सकता। केवल एक सक्रिय मन ही, जो अनुकरण में न उलझा हो, जो भयग्रस्त नहीं हो, समस्या को देख-समझ कर उसके पार जा सकता है, उससे मुक्त हो सकता है।</p>
<p>You are quoting somebody else because you have not thought out the problem. You read Shakespeare or Milton or Dickens or somebody else, and you quote a phrase out of it and say, 'I must know the meaning of it.' But if, as you were reading, you thought things out, if as you went along, you used your mind, then you would never quote. Quoting is the most stupid form of learning.</p>	<p>आप किसी अन्य के वक्तव्य का उल्लेख इसलिए करते हैं क्योंकि आपने समस्या पर स्वयं चिंतन नहीं किया होता है। आप शेक्सपीयर या मिल्टन अथवा डिक्सेंस को पढ़ते हैं या किसी और को, और फिर आप उसमें से कोई कथन उद्धृत कर कहते हैं, “मुझे इसका मतलब मालूम होना चाहिए”। परंतु पढ़ते समय यदि आप विभिन्न बातों पर ठीक से विचार करते, अपनी मन-बुद्धि को प्रयोग में लाते हुए उसके साथ-साथ चलते, तो आप कुछ भी उद्धृत न करते। दूसरों के कहे को दोहराते रहना सीखने का एक बेहद घटिया तरीका है।</p>
<p>Question: No risk, no gain; no fear, no conscience; no conscience, no growth. What is progress?</p>	<p>प्रश्न : जोखिम लिए बिना कुछ भी पाया नहीं जा सकता, भय न हो तो विवेक जागृत नहीं होता और विवेक के बिना विकास संभव नहीं। तब प्रगति क्या है?</p>

## Chapter 4

<p>Krishnamurti: What is progress? There is a bullock cart and there is a jet plane. In this there is progress. The jet plane does 1300 to 1500 miles an hour, and the bullock cart does two miles an hour. There is progress in this. Is there progress in any other direction? Man has progressed scientifically—he knows the distance between stars and the earth, he knows how to break the atom, he knows how to fly an airplane, go down in a submarine, he knows how to measure the speed of the earth. There is progress all along that line. Is there progress in any other direction? Is there any lessening of wars? Are people more kind, more thoughtful, more beautiful? So, where is progress? There is progress in one direction, but there is no progress in the other.</p>	<p>कृष्णमूर्ति : प्रगति क्या है? बैलगाड़ी है और जेट विमान है, बैलगाड़ी से जेट विमान तक पहुंचना प्रगति है। इसमें प्रगति है। जेट विमान १३०० से १५०० मील प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ता है और बैलगाड़ी दो मील प्रतिघंटे की रफ्तार से चलती है। इस प्रकार यह प्रगति तो अवश्य है। परंतु क्या इससे भिन्न किसी दिशा में कहीं प्रगति हो रही है? वैज्ञानिक रूप से मनुष्य ने हालांकि बहुत प्रगति की है—उसे तारों और धरती के बीच की दूरी पता है, वह जानता है कि परमाणु विखंडन कैसे किया जाता है, वह जानता है कि हवाई जहाज कैसे उड़ाया जाता है, पनडुब्बी में बैठकर जल में कैसे उतरा जाता है, पृथ्वी की गति को नापने का तरीका उसे मालूम है। उस दिशा में तो प्रगति हो रही है। क्या इसके अतिरिक्त किसी अन्य दिशा में प्रगति हो रही है? क्या युद्धों में कमी आ रही है? क्या लोग अधिक दयालु, अधिक विचारशील और अधिक सौम्य हो रहे हैं? इसलिए प्रगति कहां हो रही है? एक दिशा में तो प्रगति अवश्य है, परंतु दूसरी दिशा में कोई प्रगति नहीं हो रही है।</p>
<p>You say risk will bring about progress. We make statements without seeing all the implications. We then read some phrases, and students imitate, copy those phrases, put them up on the wall and repeat them.</p>	<p>आप कहते हैं जोखिम लिये जाने पर प्रगति होगी। सारे निहितार्थों को समझे बिना ही हम वक्तव्य दे देते हैं। फिर हम कुछ उक्तियां पढ़ते हैं और विद्यार्थी उन्हें दुहराते हैं, वे उन्हें लिख लेते हैं उन्हें दीवारों पर प्रदर्शित करते हैं और उनका बारंबार जिक्र करते रहते हैं।</p>
<p>Question: What is happiness and how can it be obtained?</p>	<p>प्रश्न : प्रसन्नता क्या है और इसे कैसे पाया जा सकता है?</p>
<p>Krishnamurti: You obtain happiness as a byproduct. If you look for happiness, you are not going to get it. But if you are doing something which you think is nice, good, then happiness comes as a side result. But if you seek happiness, it will always elude you; it will never come near you. Say, for instance, you are doing something which you really love to do—painting, studying, going on a</p>	<p>कृष्णमूर्ति : प्रसन्नता एक आनुषंगिक परिणाम है। यदि आप इसे सीधे ही पाना चाहें तो यह आपको नहीं मिलने वाली। परंतु यदि आप ऐसा कोई कार्य कर रहे हैं जो आपकी दृष्टि में शुभ है, तो प्रसन्नता उसके पीछे-पीछे चलकर अनायास ही आ जाती है। परंतु यदि आप प्रसन्नता को पाने की चेष्टा करते हैं तो यह सदैव आपसे दूर भागती रहेगी, यह कभी आपके पास न आएगी। उदाहरण के लिए मान लीजिए आप कुछ ऐसा कार्य करने जा रहे हैं, जिससे आपको सचमुच लगाव है—चित्रकारी करना, अध्ययन करना, भ्रमण के लिए</p>

## Chapter 4

---

walk, looking at the sunshine, the shadows, something of which you feel, 'How nice to do it.' In the doing of it you have happiness. But if you do it because you want to be happy, you will never be happy.	जाना, सूर्य की धूप को, छायाओं को देखना--ऐसा कोई कार्य करते हैं जिसमें आपको यह महसूस होता है कि इसे करना कितना अच्छा लगता है। तो उसे करने में आपको प्रसन्नता मिलेगी। परंतु यदि आप इस कार्य को यह सोचकर करते हैं कि इसे करने से आपको प्रसन्नता मिलेगी, तो आप प्रसन्नता से वंचित रह जाएंगे।
January 7, 1954	७ जनवरी १९५४